Date.....

राग बागेश्री

द्वितीय प्रहर निशि गनि मृदु, मानत मस सम्वाद।
आरोहन स्वर रे प वर्जित, राखत काफी थाट।

राग विवरण इस राग की रचना थाट से मानी गई है। इसके आरोह में रे प स्वर वर्जित हैं और अवरोह में सातों स्वर प्रयोग किये जाते हैं, इसलिये इसकी जाति औडव-सम्पूर्ण है। वादी म और सम्वादी सा है। गायन-समय रात्रि का द्वितीय प्रहर है। इसमें ग नि स्वर कोमल ~~म~~ हैं।

आरोह - नि॒ सा ग॒ म, ध नि॒ सां।

अवरोह - सां नि॒ ध, म प ध ग॒ ऽ म ग॒ रे सा।

पकड़ - ध नि॒ सा म, ध नि॒ ध म, म प ध ग॒, म ग॒ रे सा।

इस राग में म ध नि॒ ध म ग म ग॒ रे सा स्वर समूहों का बहुत सुंदर वर्णन किया गया है। वादी स्वर म और सम्वादी स्वर स होने के कारण इसके मध्य पर बहुत जोर पड़ता है।

थाट - काफी
स्वर कोमल - ~~काफी~~ ग, नि
वर्जित स्वर - ~~म कोमल~~ प, आरोह - रे, प
वादी स्वर - ~~प, आरोह - रे, प~~ म
सम्वादी स्वर - ~~म~~ सा
राग के गाने का समय - मध्य रात्रि

Spiral

Scanned by CamScanner

Date..........

(राग बागेश्री)

स्थाई	तीन ताल	स्वरलिपि	
			रे रे सा ऽ
सां – नी नी	ध म म ध	म ग॒ रे सा	ह र वा ऽ
कौ ऽ न क	र त तो री	बि न त पि	म ग॒ रे सा
नि ऽ ध ऽ	नि सा सा –	म ध – नि	ऽ बा ऽ त
म ऽ नो ना	मा ऽ नो ऽ	ह म री ऽ	2
0	3	X	

अन्तरा

	सां सां सां सां	नि सां रें सां	नि – ध –
ग म ध नि	ये ऽ मो री	सु ध हु ना	ली ऽ नी ऽ
ज ब से ग		ग ऽ ऽ म	म ग॒ रे सा
ध – ध –	नी – ध –	के ऽ ऽ ध	र जा ऽ त
ऽ चा ऽ है	सौ ऽ त न		2
	3	X	

आलाप

कौ ऽ न क	र त तो री	बि न त पि	ह र वा ऽ
ध नि सं –	म – – –	म – ग –	रे – सा –
कौ ऽ न क	र त तो री	बि न त पि	ह र वा ऽ
स – – –	ध नि सा –	म ध नि ऽ	सं – – –

अन्तरा

ज ब से ग	ये ऽ मो री	सु ध हु ना	ली ऽ नी ऽ
सा – रे स	नि – ध –	म ग रे सा	गम धनि धनि सं –
ज ब से ग	ये ऽ मो री	सु ध हु ना	ली ऽ नी ऽ
ग म ध नि	सां – – –	नि सां रें सां	नि – ध –

Scanned by CamScanner

राग

Date............

तानें

	र न ती री	गम धम गम धनि	धम गम ग- रेस
कि ऽ न क	र न ती री	गम धनि संरे सांनि	धम गम ग- रेस
कि ऽ न क	र न ती री	रि न त पि	ध र धा ऽ
कि ऽ न क	र न ती री	सांनि धनि गम धनि	ध- मग मग रेस
निस मग मग रेस	गम धनि संरे सं-		

राग बागेश्री
(तराना)

स्थायी - तन देऽना देऽना देऽना धिरधिर तनन, तादियन तन तदारे
तन तदारे तन तादियन तनन नदेरे ना

अंतरा - धिर दानी धिर दानी तुधिर दानी तुं धिर धिर तादानी
तादियारे तन तादियारे तन तन तुं धिर दानी दीं

स्थायी -

		म	ग॒ रे - सा
		त	न दे ऽ ना
रे - सा रे	सा नि॒ ध नि॒	म म म ग॒	म ध नि॒ ध
दे ऽ ना दे	ऽ ना धिर धिर	त न न त	ना रे ता दि
म ध नि॒ सां	रें सां सां नि॒	ध ध सां नि॒	- धं प म
य न त न	त दा ऽ रे	त न त दा	ऽ रे त न
ग॒ म ध नि	सां नि॒ ध म	ग॒ रे सा	
त दि य न	त न न न	दे रे ना	

अंतरा -

		म म ग॒ ग॒	धं ध नि॒ ध
		धिर दा नी धिर	दा नी तु धिर
सां सां सां सां	रें नि॒ सां सां		
दा नी तुं धिर	धिर ता दा नी		
		ध नि॒ सां मं	गं रें ध नि॒
		त दि या रे	त न त दि
सां नि॒ ध म	ग॒ म ध नि॒	सां नि॒ ध म	
या रे त न	त न तुं धिर	दा नी दीं त	
X 0	2	0 3	

Spiral

Spiral

Scanned by CamScanner

Date..........................

राग मालकौंस

यह राग भैरवी थाट से उत्पन्न माना जाता है। इस राग में रे व प स्वर नहीं लगते, अतः इसकी जाति औडव - औडव मानी जाती है।

विशेष

राग मालकौंस रात्रि के रागों में बहुत ही लोकप्रिय राग है। इस राग के युगल स्वरों में परस्पर संवाद अधिक होने से इसमें मधुरता टपकती है। इस राग का चलन विशेषतया मध्यम पर केंद्रित रहता है।

थाट - भैरवी
कोमल स्वर - ग, ध, नि
वर्जित स्वर - रे, प
जाति - औडव - औडव
वादी स्वर - म
सम्वादी स्वर - स
गाने का समय - रात्रि का तृतीया पहर

आरोह - नी़ सा ग म ध नि सां
अवरोह - सां नि ध म ग म ग सा
पकड़ - ध़ नि़ सा म ; म ग ; म ग सा

Scanned by CamScanner

Date..........................

राग मालकौंस

स्थाई

स्वर लिपि

ग॒	ग॒	ग॒	स	नि॒	स	ध॒	नी॒	स	म	म	म	ग॒	म	ग॒	म
मु	ख	मो	ऽ	ड़ऽ	मो	ऽ	ड़	मु	स्का	त	जा	ऽ	त	मु	ख
ग॒	ग॒	स	स	ध॒	नी॒	सां	सां	सां	सां	ध॒	नी	ध॒	ग॒	ग॒	म
अ	ति	द्द	वि	ली	जा	ऽ	रि	च	ली	फ	त	श्रृं	गा	ऽ	र
0				3				X				2			

अन्तरा

ग॒	ग॒	ग॒	ग॒	ग॒	म	ध॒	नी॒	सां	सां	सां	सां	ग॒	नी॒	सां	सां
का	हु	की	र	सी	ली	अ	खि	यॉं	ऽ	म	म	मा	ऽ	ई	ऽ
नी॒	नी॒	नी॒	नी॒	सां	सां	सां	सां	ध	नी	ध	प	ग॒	प	म	म
या	ऽ	वि	थि	सु	ऽ	दं	र	वा	ऽ	क	ह	ला	ऽ	ई	ऽ
मं	मं	मं	गं॒	गं॒	सां	सां	सां	ध॒	नी॒	ध॒	म	ग॒	म	ग॒	म
च	ली	जा	ऽ	ऽ	त	स	ब	स	खि	यां	सा	ऽ	ध	मु	ख
0				3				X				2			

Spinal

राग मालकौंस

Date.....

आलाप

मु रव मो ड़	डड़ मो ऽ ड़	मु स्का त जा	ऽ त मु रव
नि सा ग म	ध नि ध म	ग म ध म	ग म ग स
मु रव मो ड़	डड़ मो ऽ ड़	मु स्का त जा	ऽ त मु रव
स – – –	नि ऽ सा ऽ	ग ऽ मा ऽ	गम धनि धनि स

तानें

मो ऽ ड़ मो	ऽ ड़ मु स	निस गम धनि धम	गम धम गम गस
मो ऽ ड़ मो	ऽ ड़ मु स	निस गम धनि धम	सानि धम गम गस

Scanned by CamScanner

Date..........................

शुद्ध सारंग

'शुद्ध सारंग' या 'सारंग' काफ़ी थाट का राग है। इसकी जाति षाड़व है। इसमें ऋषभ वादी एवं पंचम संवादी है। दोनों मध्यम और दोनों निषादों का प्रयोग होता है। आरोह और अवरोह में गंधार वर्जित है। कोई-कोई अवरोह में धैवत वर्जित करके भी गाते हैं। समय दिन का दूसरा प्रहर है। इसका आरोह-अवरोह इस प्रकार है- सा रे म प, मे प नि सां। सां नि प मे, प ध प म रे ऩि सा।

स्वरूप :- ऩि सा रे सा, ऩि ऩि सा रे, मे प मे रे रे सा। दूसरा प्रकार - सा रे म रे, प म प, ध ध प, ध नि प, म प, म रे ऩि सा।

आरोह - सा, रे मे प नि सां

अवरोह - सां नि, ध प, मे प, म रे सा, ऩि प़ ऩि ध़ सा

पकड़ - ऩि सा, रे मे रे, रे मे प, रे म रे, ऩि ऩि सा

स्थाई -

अब मोरी बात मान ले पियरवा,
जाऊ मैं तोपे वारि वारि वारि वारि

अन्तरा

प्रेम पिया हमसे नहीं बोलत
विनति करत मैं तो हारि
हारि हारि हारि - अब

राग शुद्ध सारंग

स्थाई — स्वर लिपि — Date........................

रे	नि	-	सा	ऩि	-	प़	म़	नि	ध	सा	नि	रे	सा	-	रे
ब	बो	ऽ	री	बा	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	त	ऽ	मा
म	प	नि	सा	नि	-	-	प	-	-	म	प	म	रे	-	रे
न	ल	ऽ	पि	य	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	र	वा	ऽ	ऽ	जा
म	प	नि	सां	पनि	सांरें	सां	प-	ध-	प	रे	म	रे	नि	ध	म
ऊँ	मैं	तो	पै	वाऽ	ऽऽ	रि	वाऽ	ऽऽ	रि	वा	ऽ	रि	वा	रि	आ
3				x				2				0			

अन्तरा

प	-	नि	नि	सां	-	सां	सां	रें	मं	रें	सां	सं	सं	नी	नी
पे	ऽ	ऽम	पि	या	ऽ	ह	म	से	ऽ	न	हि	बो	ऽ	ल	त
प	ऩि	सां	रें	सां	निध	मं	पं	निसां	रे	सां	प-	धं	प	रे	म
बि	न	ति	क	र	तऽ	मै	तो	हाऽ	ऽ	री	हाऽ	ऽ	री	हा	ऽ
2				3				x				0			

रे	नि	सा	म
री	हा	री	अ
0			

आलाप

रे - म -	रे - सा -	ऩि - सा -	रे - सा -
रे - मा -	रे - सा -	ऩि - ध़ -	प़ - ध़

राग शुद्ध सारंग

Date..........................

अलाप

नि़ - सा - रे - म - प - रे - नि़ - सा -

रे - म - रे - सा - नि़ - सा - रे - सा

तानें - ऊंचं मोरी बा ऽऽ - निस रेमं पनि सांनि धप मप रेसं

" " बा ऽऽ रेमं पनि धप मंप रेम रेस निस

राग भैरव

राग-विवरण - इसकी उत्पत्ति भैरव थाट से मानी गई है। इसमें ऋषभ और धैवत स्वर कोमल लगते हैं।
प्रातः काल 4:00 से 7:00 बजे तक इसे गाया-बजाया जाता है। यह सम्पूर्ण जाति का राग है। अतः यह स्पष्ट है कि इसके आरोह- अवरोह दोनों में सातों स्वर प्रयोग किये जाते हैं।

आरोह - सा, रे ग म प ध नि सां।
अवरोह - सां नि ध प म ग रे सा।
पकड़ - ग म ध प, ग म रे ऽ रे सा।

विशेषता -

(i) यह अपने थाट का आश्रय राग है अर्थात् यही नाम इसके थाट को भी दिया गया है।
(ii) इसका गायन-समय प्रातः काल 4 (4) से 7 बजे तक है, इसलिए इसे संधि-प्रकाश राग कहा गया है। हम पीछे बता चुके हैं कि 4 से 7 बजे तक संधि-प्रकाश का समय कहलाता है।
(iii) इसके ऋषभ व धैवत पर आंदोलन किया जाता है, जैसे - ग, म, रे, ऽ, रे सा तथा ग म ध ऽ ध ऽ प।
(iv) यह एक प्राचीन राग है। इसके कई प्रकार प्रचलित हैं जैसे, अस्सि भैरव, आनंद भैरव आदि।
(v) कभी-कभी इसके आरोह में पंचम वर्ज्य कर दिया जाता है, जैसे - ग, म ध ऽ ध नि सां।
(vi) अवरोह में कहीं गंधार वक्र कर दिया जाता है, जैसे - म प ग म रे ऽ रे सा।

न्यास के स्वर - सा, रे प और ध।

Sunil

Scanned by CamScanner

Date........................

राग भैरव

स्थाई — जागो मोहन प्यारे
सांवरी सूरत मोरे मन ही भावे
सुन्दर श्याम हमारे - रे -

अन्तरा
प्रातः समय उठि भानु उदय भयो।
ग्वाल बाल सब भूपति आये ।।
तुमरे दरश के काजे ठाढे
उठो - २ नन्द किशोर

स्वर लिपि — स्थाई

ग म ध॒ ध॒	प प ध॒ म	मप ध॒प मप ध॒प	म म म ग
जा ऽ गो ऽ	मो ऽ ह न	प्या ऽ ऽ ऽ	रे ऽ ऽ ऽ
ग म ग नी	ग म प प	म ग म ग	रे॒ रे॒ सां सां
सां व री सू	रत मो रे	मन ही ऽ	भा ऽ वे ऽ
नी सं ग म	प ऽ प ध॒	प पध॒ नीसं नीसं	ध॒ प ध॒प म
सु ऽ न्द र	श्या ऽ म ह	मा ऽऽ ऽऽ ऽऽ	रे ऽ ऽऽ ऽ
0	३ अन्तरा		२

म म म म	प प ध॒ ध॒	प ध॒ सं नी	सं नी सां सां
3. प्राऽतः स	म य उठि	भा ऽ नू उ	द य भ यो
ध॒ ध॒ ध॒ ध॒	नी नी सं सं	नीसं रेंसां सां ऽ	नीसं रेंसं ध॒ प
ग्वाऽल बा	ऽ ल स ब	भूऽ पति	आ ऽ ऽऽ ये ऽ
4. प ध॒ प म	ग म प ध॒	म ग म ग	रे॒ रे॒ सं सं
तु मरे द	र श के ऽ	का ऽ जे ऽ	ठा ऽ ढे ऽ
नी सं म म	प ऽ प प	प पध॒ नीसं नीसं	ध॒प ध॒प प
उठो उठो	न्द द कि	शो ऽऽ ऽऽ ऽऽ	रे ऽ ऽऽ ऽ

Spiral

स्थाई

Date........

जागो मोहन	प्यारे —		
सं - धु सां	स रे — —	सां - धुसं गा	म रेरे सां
जागो मोहन	प्यारे —		
सगा — —	गा म रेरे सां	निसां ध म प	गाम रेरे सां
जागो मोहन	प्यारे — —		
नि सं गा म प	गा म - प	धु धु प —	गा म रेरे सां
0	3	X	2

अन्तरा

प्रातः समय उठि	भानु उदय भये		
गा म प —	गा म धु —	गा म प ध नीम	रे रे स —
प्रातः समय उठि	भानु उदय भये		
गाम पधु नी स	रे रे स —	सनी धु प म	गाम रे रे सां
0	3	X	2

तानें

1. जागो मोहन →
सरे गाम पधु पम पधु पम गारे सां

2. जागो मोहन →
सरे गाम पधु नीधु पम गारे गारे सां ऽ

3. जागो मोहन →
गाम पधु सानी धुप - सानी गाग रेसा

4. जागो मोहन प्यारे →
सा सरे सा सरे गारेस सरे गाम गारे सा सरे गाम पधु
पम मरेस

Spiral

Scanned by CamScanner